2 नचिकेता

आज से सहस्रों वर्ष पूर्व महर्षि बाजश्रवा हुए।

महर्षि बाजश्रवा का अधिकांश समय जप-तप में बीता करता था। उनके पुत्र का नाम नचिकेता था।

नचिकेता पितृभक्त बालक था। उसमें दृढ़ता, सत्य और धर्म के प्रति अगाध निष्ठा थी। उसके मुखमण्डल से तेज टपकता था। वह सहिष्णु था। बालक नचिकेता के इन्हीं गुणों के कारण पिता उससे अगाध स्नेह रखते थे। इस तरह नचिकेता पिता के लिए प्राणों से प्यारा बन गया था।

एक बार बाजश्रवा की इच्छा सर्वमेघ यज्ञ करने की हुई। इस यज्ञ में अपना सब कुछ दान कर देने के बाद ही फल की प्राप्ति होती है। इस बात को महर्षि बाजश्रवा अच्छी तरह जानते थे। यही बात उन्होंने अपने पुत्र नचिकेता को भी बताई थी। नचिकेता साधु प्रवृति का बालक था। पिता की इच्छा जानकर उसे बेहद खुशी हुई।

यज्ञ के लिए शुभ तिथि निश्चित की गई। उस दिन सर्वमेघ यज्ञ का शुभारम्भ हुआ। उसमें भाग लेने के लिए दूर-दूर से ब्राह्मण पधारे। नचिकेता ने यज्ञ की एक-एक क्रिया को ध्यान से देखा। सभी क्रियाएँ यथासमय पूर्ण होती गईं। अन्त में सिद्धहस्त ब्राह्मणों ने नारियल की पूर्णाहुति देकर उसे सम्पन्न किया। यज्ञ की समाप्ति पर महर्षि बाजश्रवा को अपना सब कुछ दान में दे देना था। ब्राह्मणों को अच्छा दान मिलने की पूर्ण आशा थी।

यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद महर्षि बाजश्रवा उठे। अग्नि देवता को नमस्कार करके वे अपनी गोशाला की ओर बढ़े। उनकी गोशाला में अनेक बढ़िया गायें थीं। वे सभी गायों को दान में देने का निश्चय कर चुके थे। परन्तु गोशाला तक पहुँचते-पहुँचते उनका मन लोभ से भर गया। वे

गोशाला की कमजोर, बूढ़ी और दूध न देनेवाली गायों की छँटनी करके ब्राह्मणों को दान-स्वरूप देने लगे।

ब्राह्मणों को ऐसी दक्षिणा की स्वप्न में भी आशा न थी। महर्षि बाजश्रवा की लोभ प्रवृत्ति देखकर वे दुखी हुए, पर कुछ कह नहीं सके। नचिकेता भी यह सब कुछ देख रहा था। उसे पिता के निश्चय बदल जाने से विशेष दु:ख था। उसने पिता के पास जाकर पूछा, ''पिताजी ! आपने तो इस महायज्ञ में अपना सर्वस्व दान में देने का निश्चय किया था, लेकिन आप अपनी प्रिय चीजें न देकर ये बूढ़ी व कमजोर गायों को ही दे रहे हैं।''

महर्षि बाजश्रवा पुत्र की ओर देखकर तनिक मुस्कुराये पर बोले कुछ नहीं। वे वैसी ही गायों का दान करते रहे।

अब नचिकेता से नहीं रहा गया। उसकी सहनशक्ति समाप्त हो रही थी। उसने निडरतापूर्वक पिता से कहा, ''पिताजी, आपकी प्रिय वस्तु तो मैं हूँ। मुझे आप किसे दान में देंगे?''

इतना सुनते ही महर्षि बाजश्रवा के अधरों की मुस्कान लुप्त हो गई। उसका स्थान क्रोध ने ले लिया। वे उसी अवस्था में बोले, ''नचिकेता मैं तुम्हें यमराज को दान में दूँगा।''

''मैं इसे सहर्ष स्वीकार करता हूँ, पिताजी।'' नचिकेता ने खुश होकर उत्तर दिया, ''मैं आपकी आज्ञा से यमराज के पास चला जाऊँगा पर आप यज्ञशाला की सारी गायें ब्राह्मणों को दान में अवश्य दे दें। इसके बिना आपका सर्वमेघ यज्ञ निष्फल रहेगा।''

महर्षि बाजश्रवा के मुख से क्रोध में निकला, ''छोटा मुँह और बड़ी बात करता है। यज्ञ की मुझे चिन्ता होनी चाहिए, तुझे नहीं। तुम यमराज के पास जाओ बाकी मैं स्वयं देख लूँगा।''

महर्षि बाजश्रवा क्रोधावेश में यह भी भूल गए कि नचिकेता उनका इकलौता पुत्र है। पिता की ओर से मिला हुआ आदेश उस पितृभक्त बालक के लिए ब्रह्म-वाक्य था।

उधर दृढ़निश्चयी नचिकेता ने एक क्षण भी खोना ठीक नहीं समझा। उसने पिताजी के चरणों को स्पर्श कर यमराज के पास जाने की अनुमति माँगी।

अब महर्षि बाजश्रवा को होश आया कि उन्होंने क्रोधावेश में नचिकेता को यह क्या कह दिया? वे उसके दृढ़ निश्चय को अच्छी तरह जानते थे। वह इस बात से भी परिचित थे कि नचिकेता यमराज के पास जाए बिना मानेगा नहीं। फिर भी पिता का स्नेह उमड़ आया। उन्होंने पूछा, ''वत्स! यमराज से परिचित हो?''

''हाँ, पिताजी! वे मृत्यु के देवता हैं।'' नचिकेता ने सहज स्वर में कहा।

''यमराज के विषय में इतना जानकर भी तुम उनके पास जा रहे हो?'' महर्षि बाजश्रवा ने समझाने का प्रयास करते हुए कहा, ''मृत्यु के मुख में पहुँचकर कोई नहीं लौटा, वत्स!''

''जानता हूँ, पिताजी।'' नचिकेता ने कहा, ''पिता की आज्ञा ही मेरे लिए सर्वोपरि है। उसी ने मुझे निडर बना दिया है। आपके आशीर्वाद से मैं सब जगह आसानी के साथ पहुँच सकता हूँ। फिर मृत्यु तो ऐसा सच है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। एक-न-एक दिन सभी को उसके पास पहुँचना है।''

नचिकेता का तर्क न्यायसंगत था। उसके ज्ञान पर महर्षि बाजश्रवा को हर्ष भी हुआ और बिछोह पर शोक भी। वे पश्चाताप करते हुए बोले, ''वत्स, मैंने तो क्रोधावेश में ऐसा कह दिया था। मेरा मतलब यह नहीं था कि तुम यमपुरी जाओ। अब मैं किसी कीमत पर भी तुम्हें यमपुरी जाने की आज्ञा नहीं दे सकता।''

नचिकेता ने अत्यन्त विनम्र होकर कहा, ''आप तो यमपुरी जाने की आज्ञा पहले ही दे चुके हैं। अब कुछ भी कहना मेरे लिए निरर्थक है। मैंने आपकी आज्ञा पालन करने का संकल्प ले लिया है। अब तो उसे पूरा करने का अवसर प्रदान कीजिए और मुझे यमराज के पास जाने दीजिए। इसी में मेरा कल्याण है।''

नचिकेता की वाणी ने महर्षि बाजश्रवा को निरुत्तर कर दिया। उनका सौम्य चेहरा कुम्हला गया। उनके मस्तक पर विषाद की रेखाएँ स्पष्ट दिखाई पड़ने लगीं। नचिकेता को कहे वाक्य उन्हें शूल की तरह चुभने लगे।

पिता की ऐसी अवस्था देखकर नचिकेता ने कहा, ''पिताजी! आपके सर्वमेघ यज्ञ की सफलता भी मेरी यमलोक की यात्रा में ही है। उसे पूरा करना मेरा धर्म है। धर्म पर चलने का आदेश आप अवश्य देंगे।''

नचिकेता की ज्ञानभरी बातों के आगे महर्षि निरुत्तर हो गए। उन्होंने अश्रुपूर्ण नेत्रों से अपने इकलौते पुत्र नचिकेता को विदाई दी।

नचिकेता पिता को नमस्कार करके यमपुरी की ओर प्रस्थान कर गया। वह दिन-रात चलता रहा। उसे यमपुरी पहुँचने में कई दिन लग गए। यमपुरी के मुख्य द्वार पर उसे रोक लिया गया। उस समय यमराज कहीं बाहर गए हुए थे। उसे मुख्य द्वार पर ही उनकी प्रतीक्षा करनी पड़ी। ये प्रतीक्षा की घड़ी में तीन दिन और तीन रातें बीत गई। वह भूखा-प्यासा वहीं पड़ा रहा।

अन्त में यमराज लौटकर आए। अपने मुख्य द्वार पर ऋषि-कुमार को देखकर चिन्तित हो उठे। फिर उसका परिचय जानने के उद्देश्य से पूछा, ''तुम कौन हो?''

नचिकेता ने नमस्कार कर विनम्र स्वर में कहा, ''देव! मैं महर्षि बाजश्रवा का एकमात्र पुत्र नचिकेता हूँ।''

यमराज ने प्रश्न किया, ''ऋषिकुमार! तुम्हारे यहाँ आने का कारण?''

नचिकेता फिर विनम्र स्वर में बोला, ''देव! मेरे पिताश्री ने सर्वमेघ यज्ञ किया है। उसी की दक्षिणास्वरूप मुझे आपकी सेवा में भेजा है।''

इतना सुनकर यमराज का आश्चर्यचकित होना स्वाभाविक था। वे बोले, ''तुम्हें यमपुरी आते हुए भय नहीं लगा?''

नचिकेता ने सरलता के साथ उत्तर दिया, ''देव! भय कैसा? मेरी दृष्टि में मृत्यु तो सबसे बड़ा वरदान है। जब इंसान की देह उसका साथ देना छोड़ देती है, तब मृत्यु ही उसे कष्टों से मुक्ति दिलाती है। इसलिए इस मुक्तिदात्री को मैं भय का कारण नहीं मानता। मैंने तो सदैव इसे वरदान रूप में ही स्वीकारा है।''

बालक नचिकेता की बातें ज्ञान और रहस्य से भरी हुई थीं। इतनी अल्पावस्था में इतना गुणवान होना किसी विरले का ही काम है। इसलिए यमराज को और भी ज्यादा आश्चर्य हुआ। वह बालक की ज्ञान-भरी बातों से प्रभावित होते जा रहे थे। कुछ क्षण रुककर उन्होंने पूछा, ''नचिकेता, तुम तीन दिन से भूखे-प्यासे मेरे द्वार पर पड़े हुए हो?''

इस बार नचिकेता मौन रहा। उसने यमराज के इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

यमराज ने उसके आतिथ्य का पूरा प्रबन्ध कर दिया और खा-पीकर विश्राम करने के लिए कहा।

बालक नचिकेता ने यमराज का आतिथ्य स्वीकार कर लिया। वह खा-पीकर विश्राम करने लगा। अगले दिन जब वह सोकर उठा तो उसे यमराज ने बुलवाया। उसके आने पर यमराज ने कहा, ''ऋषिकुमार! हम तुम्हारे ज्ञान, पितृभक्ति और कर्मनिष्ठा से बहुत प्रसन्न हैं। इस उपलक्ष्य में तुम हमसे तीन वर माँग सकते हो।''

''देव! मैं तो दक्षिणास्वरूप आपके पास भेजा गया हूँ।'' नचिकेता ने विनम्र स्वर में कहा, ''फिर आपसे वर कैसे माँग सकता हूँ?''

बालक नचिकेता की न्यायसंगत बात सुनकर यमराज बोले, ''कोई बात नहीं बालक! तुम नि:संकोच होकर वर माँगो।''

इसपर नचिकेता ने कहा, ''देव! पहला वर तो यह दीजिए कि पिताश्री का मुझ पर से क्रोध शान्त हो और उन्हें सर्वमेघ यज्ञ का सुफल प्राप्त हो।''

''तथास्तु!'' यमराज के मुख से निकला, ''और दूसरा वर?''

नचिकेता ने फिर कहा, ''देव! जिस विद्या से भय उत्पन्न न हो, वह मुझे प्राप्त हो।''

''तथास्तु!'' यमराज ने कहा, '' और तीसरा वर?''

नचिकेता बोला, ''देव! आप सर्वज्ञाता हैं। आप मुझे आत्मा का रहस्य समझाइए।''

इतना सुनकर यमराज सोच में पड़ गए, बोले, ''नचिकेता! अभी तुम बहुत छोटे हो। आत्मा का रहस्य जानना तो ज्ञानी-ध्यानी मुनियों के बस की भी बात नहीं है। तुम और कोई तीसरा वर माँग सकते हो।''

''देव! मुझ पर तो आत्मा का ही रहस्य प्रकट करने की कृपा कीजिए।'' नचिकेता ने फिर कहा, ''इसके अलावा मुझे और कुछ जानना शेष नहीं है।''

विवश होकर यमराज को नचिकेता को आत्मा का रहस्य बतलाना पड़ा।

नचिकेता आत्मा के रहस्य को जानकर वापस पृथ्वी पर लौट आया। पिता बाजश्रवा पुत्र को पाकर बहुत प्रसन्न हुए।

बालक नचिकेता का नाम '' आत्मज्ञानी' के रूप में अमर हुआ।

- कठोपनिषद्

शब्दार्थ

सहस्रों-हजारों
दृढ़ता-मजबूती
अगाध-अथाह
प्रतीक्षा-इंतजार
निष्फल-व्यर्थ
निष्ठा-श्रद्धा एवं भक्ति
सहिष्णु-सहनशील
पितृभक्त-पिता का भक्त
स्वप्न-सपना
प्रस्थान-कूच
सम्पन्न- पूर्ण होना
आहुति-हवन में अग्नि को समर्पित की जानेवाली वस्तु
सम्बल-सहारा
प्रवृत्ति-आदत
अनायास-अचानक
अनुमति-आज्ञा
न्यायसंगत- न्यायपूर्ण
संकल्प-शपथ, प्रतिज्ञा
मुक्तिदात्री-मुक्ति देनेवाली
निरुत्तर-बिना उत्तर के
शोक-दु:ख
प्रयास-कोशिश
सौम्य-सुन्दर
कर्मनिष्ठा-कर्म करने में विश्वास
परिचित-जाना-पहचाना
लोभवश-लालच के कारण।
दृढ़ निश्चयी-पक्का इरादा करनेवाला

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. नचिकेता कौन था?
2. नचिकेता क्यों दु:खी हुआ? उसने अपने पिताजी से क्या कहा?
3. नचिकेता यमपुरी किस लिए गया?
4. नचिकेता को यमपुरी के मुख्य द्वार पर क्यों रुकना पड़ा?
5. नचिकेता ने यमराज से क्या-क्या वर माँगा?
6. नचिकेता यमराज से किस तरह का रहस्य जानना चाहता था? सही विकल्प के सामने (✔) लगाइए

(क) आत्मा का (ख) मृत्यु का

(ग) जीवन का (घ) स्वर्ग का

7. **किसने, किससे कहा ?**

(क) ''मृत्यु के मुख में पहुँचकर कोई नहीं लौटा, वत्स !''

.....

(ख) ''छोटा मुँह और बड़ी बात करता है। यज्ञ की मुझे चिन्ता होनी चाहिए, तुझे नहीं।''

.....

(ग) ''आप तो यमपुरी जाने की आज्ञा पहले ही दे चुके हैं। अब कुछ भी कहना मेरे लिए निरर्थक है।''

.....

पाठ से आगे

1. महर्षि बाजश्रवा अगर ब्राह्मणों को गाय दान में दे देते तो क्या होता?
2. यज्ञ से क्या तात्पर्य है?
3. अगर आपको तीन वर माँगने के लिए कहा जाय तो आप क्या माँगेंगे?
4. नचिकेता 'साधु-प्रवृति' का था। 'साधु प्रवृति से आप क्या समझते हैं?

व्याकरण

1. **इनके पर्यायवाची शब्द बताइए-**

(क) पुत्र - वत्स, बेटा, तनय

(ख पिता - .....

(ग) यमराज -.....

(घ) गाय – .....

(ङ) साधु – .....

2. इनके विपरीतार्थक शब्द बताइए –

(क) सत्य – असत्य

(ख) धर्म – .....

(ग) सहिष्णु– .....

(घ) इच्छा – .....

(ङ) सम्पन्न – .....

3. देखिए, समझिए और लिखिए –

पितृभक्त – पितृ + भक्त

सहनशक्ति –

मुखमंडल –

गौशाला –

महायज्ञ –

ब्रह्मवाक्य –

कर्मनिष्ठ –

आत्मज्ञानी

4. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए –

(क) जो पिता की भक्ति करता हो .....

(ख) जो सब कुछ जानता हो .....

(ग) जिसने आत्मा का रहस्य जान लिया हो .....

(घ) जिसने दृढ़ निश्चय कर लिया हो .....

(ङ) जो सहनशील हो .....

गतिविधि

1. उपनिषदों के बारे में अपने शिक्षक से जानकारी प्राप्त कीजिए।